P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-III, February-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

शशी रानी अवस्थी
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कालेज,
कानपुर

मिनी सक्सेना
शोध छात्रा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कालेज,
कानपुर

सारांश

किसी भी विद्यालय का शैक्षिक स्तर अनेक कारणों जैसे छात्रों, अध्यापकों व प्राचार्यों की आपसी अन्तः क्रिया पर निर्भर करता है। प्रत्येक संस्था के सदस्यों की पारस्परिक अन्तः क्रिया अलग–अलग प्रकार की होती है, जिसका प्रभाव संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति पर पड़ता है, यदि किसी शैक्षिक संस्था में शैक्षिक विमुख एवं चिन्ताग्रस्त छात्रों की संख्या अधिक होगी तो नि"चत रूप से उस विद्यालय में f"ाक्षण–अधिगम प्रक्रिया व उसका स्तर दोनों प्रभावित होंगे, किसी भी विद्यालय का शैक्षिक स्तर जिन अनेक कारणों से प्रभावित होता है, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है–छात्रों की चिन्ता, जो विद्यालयी वातावरण को सबसे अधिक प्रभावित करती है, और यदि वातावरण दूषित होगा तो विद्यालय छात्रों के अच्छे भविष्य का निर्माता कभी नही बन सकता है। अलग–अलग परिवे"ा से आने वाले छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का स्तर भी अलग–अलग होता है, किसी भी विद्यालय में ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के छात्र पढ़ते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः चिन्ता, शैक्षिक चिन्ता, विद्यालयी वातावरण।

पस्तावना

f"ाक्षा समाज द्वारा नि"चत उद्दे"यों की प्राप्ति हेतु एक बड़ा ही प्रभाव"ाली साधन है, f"ाक्षा प्रक्रिया में छात्रों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति छात्रों द्वारा ही सम्भव है, किसी भी विद्यालय का शैक्षिक वातावरण अनेक कारणों जैसे–छात्रों, अध्यापकों व प्रधानाचार्य की आपसी अन्तःक्रिया पर निर्भर करता है। सदस्यों की पारस्परिक अन्तःक्रिया अलग–अलग प्रकार की होती है। जिसका प्रभाव संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति पर पड़ सकता है। प्रस्तुत लघु शोध की आव"यकता वर्तमान परिवे"ा में f"ाक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

वर्तमान परिवे"ा में f"ाक्षा के क्षेत्र में अनेकों प्रकार की विषम स्थितियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। छात्र f"ाक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले होते हैं। फिर भी इनका अपेक्षित योगदान नहीं मिल पा रहा है। उनमें संतोष की मात्रा में कमी आती जा रही है। परिणामस्वरूप अनेकों प्रकार की विरोधात्मक घटनायें प्रका"ा में आती रहती हैं। छात्रों की चिन्ताओं के फलस्वरूप विद्यालयी वातावरण प्रभावित हो रहा है।

इसकी वास्तविक स्थिति को पहचानना कठिन है, जो हमारे राष्ट्रीय एवं सामाजिक विकास के लिये एक प्र"न चिन्ह है। f"ाक्षा के क्षेत्र में अ"ाान्ति पूर्ण स्थिति निरन्तर बढ़ती जा रही है।

प्रायः यह देखने में आता है कि अध्यापक एवं माता–पिता छात्रों की चिन्ताओं का ठीक ढ़ंग से पता नहीं कर पाते हैं। इस कारण छात्रों द्वारा वांछनीय व्यवहार न कर पाने के कारण जिस संस्था में वे पढ़ते हैं। उसका वातावरण भी प्रभावित होता है। यदि किसी संस्था में चिन्ता ग्रस्त छात्रों की संख्या अधिक होगी तो उस संस्था का वातावरण भी अभाव"ाली होगा और छात्रों का अधिगम भी प्रभावित होगा, अनुसंधान की समस्या के रूप में यह अध्ययन का प्रमुख विषय है।

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान परिवे"ा में f"ाक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। छात्रों की चिन्ताओं को लेकर कुछ अध्ययन पा"चात्य दे"ाों में हुये हैं। भारतीय समाज एवं विदे"ाों की सामाजिक संरचना अलग होने के कारण वे निष्कर्ष यहाँ पर लागू नहीं हो सकते हैं। छात्रों को शैक्षिक चिन्ता का अध्ययन भारत में भी हुआ

है परन्तु छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर कोई अनुसंधान स्पष्ट रूप से नहीं किया गया है। जैसा कि अनुसंधानकर्ती को सम्बन्धित साहित्य के विवेचन स पता चला है। अतएव यह आव"यक प्रतीत हुआ कि प्रस्तुत शोध समस्या का अध्ययन किया जाये।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्न उद्दे"यों की प्राप्ति हेतु किया गया है–

1. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना।
2. शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
5. शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
8. शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययनों का सर्वेक्षण

शिक्षक चिन्ता पर अध्ययन

राव 1986 ने परीक्षा चिंता, बुद्धिमता व उपलब्धि के बारे में हाईस्कूल स्तर के अनु0 जाति एवं गैर अनु0 जाति के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया गया कि अनु0 जाति व गैर अनुसूचित जाति के बालकों में परीक्षा सम्बन्धी चिंता में कोई अन्तर नहीं था।

रावल 1987 में सामान्य व शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों में चिंता, असुरक्षा की भावना व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया, इस अध्ययन में यह पाया गया कि शारीरिक विकलांग विद्यार्थी गैर विकलांग विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिंतित थे।

चैंग और रिचार्ड 1989 ने ताइवान के निम्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिंग, शैक्षिक निष्पादन, चिंता एवं आत्म प्रत्यय के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि छात्रों की चिंता व उनके आत्म प्रत्यय के मध्य एक प्रकार से व्युत्क्रमानुपाती सम्बन्ध है चिंता स्तर पर विद्यार्थियों के लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

डुडेजा 1992 ने सामाजिक तौर पर पिछड़े किशोरों के व्यक्तित्व का शैक्षिक चिंता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया, इस अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक चिंता का स्तर पाया गया।

जायसवाल 2004 ने अपने अध्ययन में पाया कि स्नातक स्तर पर छात्राओं में चिन्ता, कुण्ठा एवं समायोजक की प्रवृत्ति सामान्य रूप से व्याप्त है। चिंता और परिदण्डन मे ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। चिंता और स्वदण्ड में घनात्मक सहसम्बन्ध है।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

अध्ययन के उद्दे"यों की प्राप्ति के लिये निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।
2. शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरणं सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।
3. ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक रूप से अन्तर होता है।
4. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।
5. शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।
6. ग्रामीण तथा शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर होता है।
7. ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों को शैक्षिक चिन्ता का विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
8. शहरी परिवे"ा के छात्रों को शैक्षिक चिन्ता का विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की सीमाएँ

प्रत्येक शोध कार्य की कोई नि"चित सीमा होती है। जिससे कि शोध कार्य को नियंत्रित किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमायें हैं।

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल कानपुर नगर के कल्यानपुर विकास खण्ड के दस माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में छः शहरी विद्यालयों में से प्रत्येक से 20–20 विद्यार्थी एवं चार ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से प्रत्येक से 20–20 विद्यार्थी लिये गये हैं।
3. प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
4. चिन्ता के अनेक प्रकारों में से केवल शैक्षिक चिन्ता का चयन ही प्रस्तुत शोध हेतु किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन का विषय '' ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने कानपुर नगर के कल्यानपुर विकास खण्ड के छः शहरी व चार ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों से, जिनका चयन सोद्दे"य न्याद"र्ा विधि के आधार पर किया गया है, उनसे 200 विद्यार्थियों

का चयन किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्रों का चयन किया गया है,

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दो मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार है–

1. शैक्षिक चिंता मापनी–डॉ0 ए0के0 सिंह व डॉ0 कु0ए0 सेन गुप्ता द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत।
2. विद्यालयी वातावरण अनुसूची–डॉ0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

आँकड़ों का सांख्यिकीय वि"लेषण करने के लिए काई वर्ग x^2 विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में उद्दे"यानुसार आँकड़ों का वि"लेषण एवं विवेचन किया गया है जो निम्नवत् है :–

परि0 1

ग्रामीण परिवेश के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना–

H_1

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।

$(H_1)_0$

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।

सारणी–1

वर्ग–सोपान	बहुत कम चिन्तित	कम चिन्तित	औसत	चिन्तित	अधिक चिन्तित	योग	x^2
Fo	19	30	28	19	4	100	75.28 df = 4 .01 स्तर पर सार्थक
Fe	3.59	23.84	45.14	23.84	3.59	100	
Fo-Fe	15.41	6.16	17.14	4.84	0.41		
$(Fo-Fe)^2$	237.47	37.95	293.78	23.43	0.17		
$\frac{(Fo-Fe)^2}{Fe}$	66.15	1.59	6.51	0.98	0.05	75.28	

चूँकि परिगणित x^2 = 75.28 का मान .05 व .01 पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 9.488 व 13.277 से अधिक है। अतः यह सार्थक है, प्राप्त सार्थक काई वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अवलोकित वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है, को अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना की ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न हाता है, को स्वीकार किया जाता है।

परि0 2

शहरी परिवेश के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अध्ययन करना–

H_2

शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।

$(H_2)_0$

शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है।

सारणी–2

वर्ग सोपान	बहुत कम चिन्तित	कम चिन्तित	औसत	चिन्तित	अधिक चिन्तित	योग	x^2
Fo	9	20	31	25	15	100	49.52 df = 4 .01 स्तर पर सार्थक
Fe	3.59	23.84	45.14	23.84	3.59	100	
Fo-Fe	5.41	3.84	14.14	1.16	11.41		
$(Fo-Fe)^2$	29.27	14.75	199.94	1.35	130.19		
$\frac{(Fo-Fe)^2}{Fe}$	8.15	0.62	4.43	0.06	36.26	49.52	

चूँकि परिगणित x^2 = 49.52 का मान .05 व .01 पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 9.488 व 13.277 से अधिक है। अतः यह सार्थक है, प्राप्त सार्थक काई वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि शहरी छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का अवलोकित वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है, को अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना की शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है, को स्वीकार किया जाता है।

परि0 3

ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना

H_3

ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

$(H_3)_0$

ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी–3

समूह	बहुत कम चिन्तित	कम चिन्तित	औसत	चिन्तित	अधिक चिन्तित	योग	x^2
ग्रामीण	19 (14.5)	30 (24)	28 (28.5)	19 (22)	4 (11)	100	49.12 (df = 4) .01 स्तर पर सार्थक
शहरी	10 (14.5)	18 (24)	29 (28.5)	25 (22)	18 (11)	100	
योग	29	48	57	44	22	200	

चूँकि परिगणित x^2 = 49.12 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 9.488 व 13.277 से अधिक है। अतः यह सार्थक है, प्राप्त सार्थक काई वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना की ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, को अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना कि ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया जाता है, को स्वीकार किया जाता है

परि0 4

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना–

H_4

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।

$(H_4)_0$

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है।

सारणी–4

वर्ग सोपान	निम्न	औसत	उच्च	योग	x^2
Fo	20	60	20	100	1.93 (df = 2) असार्थक
Fe	15.57	68.26	15.87	100	
Fo-Fe	4.13	6.26	2.13		
$(Fo-Fe)^2$	17.06	39.19	4.54		
$\frac{(Fo-Fe)^2}{Fe}$	1.07	0.57	0.29	1.93	

चूँकि परिगणित x^2 = 1.93 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 5.991 व 9.210 से कम है। अतः यह इन दोनों स्तरों में से किसी पर सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है को स्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना कि ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है, को अस्वीकार किया जाता है।

परि0 5

शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना–

H_5

शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं होता है।

सारणी–5

वर्ग–सोपान	निम्न	औसत	उच्च	योग	x^2
Fo	21	47	32	100	24.67 (df = 2) .01 स्तर पर सार्थक
Fe	15.87	68.26	15.87	100	
Fo-Fe	5.13	21.26	16.13		
$(Fo-Fe)^2$	26.32	451.99	260.18		
$\frac{(Fo-Fe)^2}{Fe}$	1.66	6.62	16.369	24.67	

परि0 6

ग्रामीण व शहरी परिवेश के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना–

H_6

ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

$(H_6)_0$

ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी–6

समूह	निम्न	औसत	उच्च	योग	x^2
ग्रामीण	20	62	18	100	6.00 (df = 2) .05 स्तर पर सार्थक
शहरी	21 (20.5)	47 (54.5)	32 (25)	100	
योग	41	109	50	200	

चूँकि परिगणित x^2 = 6.00 का मान .05 व .01 स्तर पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 5.991 व 9.210 से अधिक है परन्तु .01 स्तर पर आव"यक मान 9.210 से कम है। अतः यह .05 स्तर पर सार्थक है। प्राप्त सार्थक काई वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है को .05 स्तर पर अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

परि0 7

ग्रामीण परिवेश के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना –

H_7

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

$(H_7)_0$

ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी–7

शै0चि0 / वि0वि0	बहुत कम चिन्तित	कम चिन्तित	औसत	चिन्तित	अधिक चिन्तित	योग	x^2
उच्च	9 (3.42)	7 (5.4)	2 (5.04)	0 (3.42)	0 (0.72)	18	36.66 (df = 8) .01 स्तर पर सार्थक
औसत	9 (11.78)	20 (18.0)	21 (17.36)	12 (11.78)	0 (2.48)	62	
निम्न	1 (3.80)	3 (6)	5 (5.6)	7 (3.80)	4 (0.8)	20	
योग	19	30	28	19	4	100	

चूँकि परिगणित x^2 = 36.66 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 15.507 व 20.090 से अधिक है। अतः यह सार्थक है, प्राप्त सार्थक काई–वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है को अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

परि0 8

शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना –

H_8

शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

$(H_8)_0$

शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी–8

शै0चि0 / वि0वि0	बहुत कम चिन्तित	कम चिन्तित	औसत	चिन्तित	अधिक चिन्तित	योग	x^2
उच्च	6 (2.88)	10 (6.4)	5 (9.92)	6 (8)	5 (4.8)	32	28.14 (df = 8) .01 स्तर पर सार्थक
औसत	2 (4.23)	8 (9.4)	24 (14.57)	9 (11.75)	4 (7.05)	47	
निम्न	1 (1.89)	2 (4.2)	2 (6.51)	10 (5.25)	6 (3.15)	21	
योग	9	20	31	25	15	100	

चूँकि परिगणित x^2 = 28.14 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिये आव"यक न्यूनतम सारिणी मान 15.507 व 20.090 से अधिक है। अतः यह सार्थक है। प्राप्त सार्थक काई–वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना कि शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है को अस्वीकार किया जाता है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या

इस अध्ययन का उद्दे"य ग्रामीण एवं शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालय वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था, यह स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्र पारिवारिक वातावरण, साधनों की उपलब्धता, आत्म वि"वास आदि अनेक चरों के सम्बध में एक दूसरे से अलग होते हैं। अतः दोनों परिवे"ाों के छात्रों में शैक्षिक चिन्ता तथा वातावरण में अन्तर होना चाहिये। शोधकर्ती द्वारा किये गये अध्ययन में भी इसी तरह के निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. यह पाया गया कि ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।
2. यह पाया गया कि शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता के स्तर का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न होता है।

3. यह पाया गया कि ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अन्तर है।
4. यह पाया गया कि ग्रामीण परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न नहीं है।
5. यह पाया गया कि शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न है।
6. यह पाया गया कि ग्रामीण व शहरी परिवे"ा के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का वितरण सामान्य वितरण से सार्थक रूप से भिन्न है।
7. यह पाया गया कि ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक रूप प्रभाव पड़ता है।
8. यह पाया गया कि शहरी छात्रों की शैक्षिक चिन्ता का उनके विद्यालयी वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि–

1. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के प्र"ाासकों को विद्यालयी वातावरण को और अधिक उत्तम बनाने का प्रयास करना चाहिये। ऐसे प्रयास किये जाने चाहिये जिससे विद्यालय में छात्र–ि"ाक्षक सम्बन्ध मधुर हों व ि"ाक्षण अधिगम प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके।
2. अभिभावकों को यह देखना चाहिये कि बच्चों पर अत्यधिक दबाव न बनायें तथा उनकी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार ही कार्य करने दें। अन्य बालकों से तुलना कर उनमें हीन भावना व अवसाद न उत्पन्न होने दें।
3. ि"ाक्षकों को बालकों के साथ सौहार्द का वातावरण बनाना चाहिये ताकि छात्र उनके समक्ष अपनी समस्यायें रखने में संकोच भय या घबराहट का अनुभव न करें, यदि ि"ाक्षक छात्र की समस्याओं का उपयुक्त समाधान करते हैं व उनकी प्रगति हेतु प्रयासरत रहते हैं तो छात्र शैक्षिक रूप से अत्यधिक चिन्तित नहीं रहते हैं और विद्यालयी वातावरण भी उत्तम बना रहता है।
4. प्रधानाचार्यों का उत्तरदायित्व है कि वे अपने विद्यालय में इस तरह का वातावरण बनायें जहाँ विद्यालय के सभी घटकों के सम्बन्ध आपस में मधर हों व छात्रों की समस्याओं का समाधान प्रेम पूर्ण वातावरण में छात्र को वि"वास में लेकर किया जाता हो ऐसा वातावरण जिसमें छात्र की शैक्षिक चिन्ताओं को दूर किया जाता हो, तथा विद्यालयी वातावरण को उत्तम बनाने में सहायक हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ स ची

1. Alkona, J.W. & Mathew, R (2007) "Aggression and Violence in Schools" http://www.science daily.com.release 2007.
2. Brookover, W.B. 1997 "Elementry School Social Climate and School Achievement" Journal of Educational and Psychological Consulttion Vol. 8.
3. Dudeja Geeta 1992 "A Study of personality Correlation of socially disadvantaged adolescents in relation to anxiety, academic achievement and Socio Economic Status" Ph.D. Education. Kanpur University. PP. 324-326.
4. Pandit K.L. 1969 – "The role of anxiety in learning and academic achievement of ehilotrea" Ph.D. Edu. Delhi University cited by Buch.
5. Rawal Mridula 1987 "A comparative study of anxiety. Feelings of in security and adjustment among normal and physically disabled students" Ph.D. Edu. Kanpur University.
6. Srivastava R. (1993) A Comparative Study of Personality Correlates among Children (adolescents) of working and non working mothers in relation to anxiety, security and academic achievement" Ph.D. Edu-Kanpur University.
7. Verma Suman & Sharma Deepali (2002) School Stress in India. Effects on time and daily emotions." International Journal of Behaviour Development. Vol 26 PP. 500-508.
8. Rao, Usha 1986 "A Comparative Study of Self Acceptance, test anxiety, intelligence and achievement among Sc. & Non S.C., high school students," University of Shimla, Indian Psychological Review, Vol. 30 (3) PP. 18-25.